संपादकीय

'**आखर**' हिंदी त्रैमासिक ई पत्रिका का पहला अंक आप सभी सुधि पाठकों के सम्मुख रखने में अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। मेरे मन के किसी कोने में बरसों से पलनेवाला एक सपना आज साकार हो रहा है और साकार होते सपने को देखना निश्चित ही सुखद होता है। चार्ल्स डार्विन ने कहा, "It is not the strongest of the species that survives, nor the most intelligent but the one most responsive to change" इससे एक बात तो चलती ही है कि समय के साथ अपने को हमें गढ़ना होता है। हम इकीसवीं सदी को तकनीक का युग कहते हैं। प्रौद्योगिकी ने नयी सदी को अपना व्यक्तिगत जादुई स्पर्श दिया है। अगर हमें जीवित रहना है तो हमें तकनीक के साथ जाना होगा। समय की मांग और युग की आवश्यकता सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी है। इसी के चलते आज आवाज, छवि, दस्तावेज, वीडियो भी तीव्र गति से यात्रा कर सकते हैं। पिछले दशक में जो असंभव लग रहा था वह अब आश्चर्यजनक नहीं है। मानो पूरी दुनिया को अपना तकनीकी स्पर्श मिल गया है, तो फिर शिक्षण का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र कैसे अछूता रह सकता है। इंटरनेट, मोबाइल फोन, टाबलेट लैपटाप और अन्य आधुनिक उपकरणों के विकास के कारण आज की दुनिया की बहुत सी चीजें डिजिटल हो रही हैं। शिक्षाप्रणाली भी काफी हद तक आधुनिकीकृत हो गई है जिससे डिजिटलीकरण के लिए राह मिल गयी है।

हम सभी अवगत हैं कि कोरोना संक्रमण राष्ट्र और प्रान्तों की भौगोलिक सीमाओं को पार करते हुए आज एक सर्वव्यापी रोग का रुप धारण कर चुका है। गत दो वर्षों से इस महामारी के चलते एक बात अच्छी हुई कि हम ऑफ लाइन से ऑन लाइन हो गए और हमारे भीतर के रचनाकार को अभिव्यक्ति का एक मंच मिल गया। हम सब जानते हैं कि पिछले तीन दशकों में किस तरह से सूचना का विस्फोट और क्रांति हुई है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास के साथ दुनिया सिकुड़ गई है और समय की सीमाएं घट गईं और प्रौद्योगिकि हमारे लिए वरदान साबित हुई। अभी तक जो काम घंटों, दिनों और

हफ्तों में होता था, उसे अब माउस के क्लिक करने भर से किया जा सकता है। संभवतः यह भी एक कारण होगा कि ई पत्रिकाओं ने भी जालतान पर अपनी उपस्थिति दर्ज कर दी। आज ई पत्रिकाएं समय की मांग ही नहीं ज़रुरत हो गयी हैं। 'आखर' इसी प्रकार का प्रयास है। इस पत्रिका में शोधालेख, कविता, कहानी, संस्मरण समीक्षा, साक्षात्कार आदि को भी स्थान दिया जा रहा है। इसके अलावा इसमें मीडिया, संस्कृति समसामायिक विमर्श, अनुवाद-लोक साहित्य एवं प्रवासी साहित्य आदि से संबंधित विषय वर्गीकृत किए गए हैं। इसमें लेखकों ने अपने अपने स्वच्छन्द विचार रखे हैं। आखर त्रैमासिक ई पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों के कारण आज यह अंक आपके सामने है।

प्रधान संपादक

(प्रो.प्रतिभा मुदलियार)

****